

हाथ की उंगलियों में पहनी जाने वाली खूबसूरत अंगूठियां

अंगूठी एक ऐसा आभूषण है, जो सदियों से सुंदरता और आकर्षण का प्रतीक माना जाता है। महिलाएं ही नहीं, बल्कि पुरुष भी अपने हाथों की उंगलियों में अंगूठी पहनना पसंद करते हैं। यह केवल सजावट का साधन नहीं है, बल्कि कई बार यह प्यार, रिश्ते और भावनाओं का प्रतीक भी होती है। खासकर सगाई और शादी में अंगूठी का बहुत महत्वपूर्ण स्थान होता है। आजकल बाजार में अंगूठियों की बहुत सारी सुंदर डिजाइन मिलती हैं। सोने, चांदी, हीरे और अलग-अलग रंगों के पत्थरों से बनी अंगूठियां हाथों की खूबसूरती को और भी बढ़ा देती हैं। कुछ लोग साधारण और हल्की अंगूठी पहनना पसंद करते हैं, जबकि कुछ लोग भारी और डिजाइनर अंगूठियां पहनना पसंद करते हैं। हर व्यक्ति अपनी पसंद और स्टाइल के अनुसार अंगूठी चुनता है।



नूर हिना खान
लेखिका

67 साल बाद एक गीत की वापसी

*Choo, choo train, a-chugging down the track
Gotta travel on, never coming back
Whoo-oo-hoo, got a one way ticket to the blues
Bye, bye love, my baby's leaving me
Now lonely teardrops are all that I can see
Whoo-oo-hoo, got a one way ticket to the blues*

यह गीत हाल के समय में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर 67 साल बाद अचानक फिर से वायरल हो गया है, जो यह दर्शाता है कि संगीत की कोई समय सीमा नहीं होती। 1959 में नील सेडका द्वारा लोकप्रिय बनाया गया यह गीत अपने भावनात्मक बोल और मधुर धुन के कारण पहले भी श्रोताओं के दिलों में खास जगह बना चुका था, लेकिन आज की डिजिटल दुनिया ने इसे एक नई पहचान दी है। आजकल सोशल मीडिया पर सैकड़ों की संख्या में इसके एआई वर्जन और लोगों द्वारा बनाई गई रील्स वायरल हैं।



इस गीत के वायरल होने का सबसे बड़ा कारण सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे इंस्टाग्राम और टिक टॉक हैं, जहां लोग पुराने गानों को नए ट्रेंड्स के साथ जोड़कर प्रस्तुत करते हैं। खासतौर पर रील्स और शॉर्ट वीडियो में इस गाने के इन्फ्लुएंसर ने इसे युवा पीढ़ी तक पहुंचाया, जो शायद पहले इस गीत से परिचित नहीं थी।



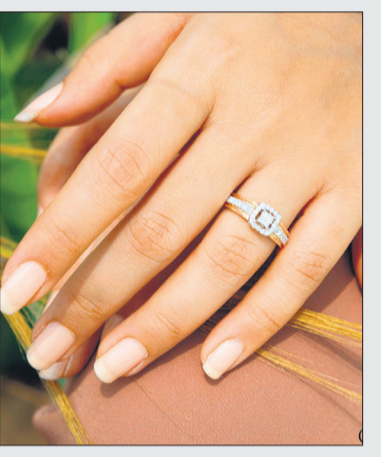
राजेश श्रीनेत
वरिष्ठ पत्रकार

गीत की धुन में एक तरह की उदासी और सादगी है, जो आज के तेज-तरार और शोर-भरे संगीत के बीच एक अलग ही सुकून देती है। यही कारण है कि लोग इसे बार-बार सुनना पसंद कर रहे हैं। इसके अलावा, इस गाने के बोल, जो एकतरफा प्रेम और बिछड़ने की पीड़ा को व्यक्त करते हैं, आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने अपने समय में थे। यह भावनात्मक जुड़ाव ही इसकी लोकप्रियता का मूल

कारण है। वायरल होने का एक और पहलू यह है कि लोग अब रेड्यो चीजों की ओर आकर्षित हो रहे हैं। पुराने गाने, फेशन और स्टाइल एक बार फिर ट्रेंड में आ रहे हैं और One Way Ticket to the Blues इसका एक बेहतरीन उदाहरण है। यह नॉस्टैल्जिया और नवीनता का एक अनोखा संगम प्रस्तुत करता है। अंततः इस गीत का दोबारा लोकप्रिय होना यह साबित करता है कि अच्छी कला कभी पुरानी नहीं होती। समय बदलता है, माध्यम बदलते हैं, लेकिन भावनाएं और सच्चा संगीत हमेशा जीवित रहते हैं। यह वायरल ट्रेंड न केवल एक पुराने गीत को नया जीवन देता है, बल्कि यह भी दिखाता है कि नई पीढ़ी भी क्लासिक संगीत को उतनी ही सराहना देती है।

अंगूठियों की डिजाइन

अंगूठियों की डिजाइन समय के साथ बदलती रहती है। पहले साधारण गोल डिजाइन अधिक पसंद किए जाते थे, लेकिन आजकल फ्लॉवर डिजाइन, हार्ट शेप, क्राउन डिजाइन और मिनिमल स्टाइल की अंगूठियां बहुत ट्रेंड में हैं। खासकर युवतियां पतली और स्टाइलिश अंगूठियां पहनना पसंद करती हैं, जो उनके हाथों को और भी आकर्षक बनाती हैं। आज के समय में अंगूठियां केवल आभूषण नहीं रह गई हैं, बल्कि यह फेशन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुकी हैं। किसी भी पार्टी, शादी या खास अवसर पर एक सुंदर अंगूठी पूरे लुक को और भी खास बना देती है। इसलिए कहा जा सकता है कि अंगूठी छोटी जरूर होती है, लेकिन इसकी सुंदरता और महत्व बहुत बड़ा होता है।



साधारण अंगूठी

यह हल्की और सादी डिजाइन की होती है। इसे रोजमर्रा में पहनना आसान होता है। ऑफिस, घर या सामान्य काम करते समय ऐसी अंगूठियां सबसे अच्छी रहती हैं।

डिजाइनर अंगूठी

डिजाइनर अंगूठियों में अलग-अलग स्टाइल, नक्काशी और नए फेशन की डिजाइन होती हैं। इन्हें पार्टी, शादी, त्योहार या किसी खास मौके पर पहनना ज्यादा अच्छा लगता है।



स्टोन या रत्न वाली अंगूठी

इन अंगूठियों में अलग-अलग रत्न लगे होते हैं, जैसे पन्ना, माणिक, मोती या नीलम। कई लोग इन्हें ज्योतिष के अनुसार पहनते हैं, क्योंकि माना जाता है कि सही रत्न जीवन में सकारात्मक ऊर्जा लाता है।

सगाई या शादी की अंगूठी

यह सबसे खास अंगूठी मानी जाती है। सगाई और शादी में जो अंगूठी पहनाई जाती है वह रिश्ते और प्यार का प्रतीक होती है। अक्सर इसमें हीरा या सुंदर पत्थर लगा होता है।



फेशन अंगूठी

फेशन अंगूठियां ट्रेंड के अनुसार बनाई जाती हैं। आजकल पतली, मिनिमल और स्टेकिंग (एक साथ कई अंगूठियां पहनना) स्टाइल बहुत लोकप्रिय है। युवतियां इन्हें कैजुअल और पार्टी दोनों में पहनती हैं।

कैसे चुनें अच्छी अंगूठी

अच्छी अंगूठी चुनते समय कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए। सबसे पहले अंगूठी का साइज सही होना चाहिए ताकि पहनने में आराम रहे। दूसरा, उसकी डिजाइन आपके हाथों और स्टाइल पर सूट करनी चाहिए। तीसरा, उसकी क्वालिटी अच्छी होनी चाहिए ताकि वह जल्दी खराब न हो। कुल मिलाकर अंगूठी एक छोटा सा आभूषण है, लेकिन यह व्यक्ति की खूबसूरती और व्यक्तित्व को और भी निखार देती है। सही अंगूठी सही समय पर पहनी जाए, तो हाथों की सुंदरता कई गुना बढ़ जाती है।

पूर्वी क्षेत्र की मिठास लिए पंजाबी आवाज वाले गायक जसपाल

होली के हिंदी फ़िल्मी गीतों के संग्रह में शायद ही किसी के पसंदीदा गानों में 'जोगी जी धीरे-धीरे...' न हो! इसे या 'नदिया के पार' के अन्य गीतों को सुनते हुए अक्सर ख्याल आता था कि भारत के पूर्वी क्षेत्र की मिठास लिए यह सरल, जादुई आवाज किसकी है, जो यूपी-बिहार के गांवों की भाषा और भावों को इतनी सहज और सुंदर अभिव्यक्ति देती है।

जिंदगी का सफर



फिर जब यह पता चला कि यह मधुर आवाज एक पंजाबी गायक जसपाल सिंह जी की है तो और ताज्जुब होना ही था। एक पंजाबी पृष्ठभूमि की आवाज और भारत के पूर्वी क्षेत्र की भाषाई मिठास इतनी खूबसूरती से संजोये हुए। फिर लगा शायद हिंदी क्षेत्र से कोई संबंध रहा हो। मगर ऐसा भी कोई उल्लेख नहीं मिला नहीं।

'अंखियों के झरोखों से', 'सावन को आने दो' जैसी कई हिट बॉलीवुड फिल्मों के लिए गाया। चूंकि उस समय के सभी ख्यात गायक अलग-अलग लोकप्रिय नायकों के साथ जुड़े हुए थे। इस कारण नायक सचिन को ब्रेक देने वाली आवाज के रूप में पारश्व गायन करने के लिए नए गायक जसपाल सिंह को चुना गया था। मगर यह सफलता उनके राह की बाधा भी बन गई। नायक के रूप में सचिन का कैरियर बहुत सफल और लंबा नहीं रहा, जबकि जसपाल जी सचिन की आवाज के रूप में सीमित पहचान में बंधते चले गए। आने वाला दौर हिंदी सिनेमा में पारश्व गायन के स्तर में गिरावट का भी रहा, जो जसपाल जी जैसे प्रतिभावान गायकों के लिए अनुकूल नहीं रहा और वो इस

नए दौर में गुमनामी में खोते गए। उनके कंठ से निकले कुछ यादगार गीतों में-धरती मेरी माता, पिता आसमान, गीत गाता चल ओ साथी गुनगुनाता चल, मंगल भवन अमंगल हारी (फिल्म- गीत गाता चल), कौन दिशा में लेके चला रे, साची कंधे तोरे आवन से हमरे (फिल्म- नदिया के पार), जब-जब तू मेरे सामने आए (फिल्म- न इन फिल्मों को ज्यादा सफलता मिली न इन्हें कोई विशेष पहचान। मगर इनका सही वक्त अभी आना शेष था। राजश्री की फिल्म 'गीत गाता चल' में संगीतकार रविन्द्र जैन जी के निर्देशन में उनकी आवाज पूरे देश में छा गई। इसके बाद उन्होंने 'नदिया के पार',

उनका जन्म 23 मार्च 1943 को अमृतसर, पंजाब में हुआ था। उन्हें स्कूल और कॉलेज के दिनों में ही गायन का शौक हो गया था। वे पढ़ाई के दौरान कई संगीत प्रतियोगिताओं में भाग लेते थे। जसपाल जी मोहम्मद रफी साहब के बहुत बड़े प्रशंसक थे और बचपन से ही उनके गाने-सुनते और मौका मिलते ही गाते थे। गायन के प्रति अपने जुनून को आगे बढ़ाने के लिए वे मुंबई चले गए, जहां उनकी बहन रहती थीं। उनकी प्रतिभा को सर्वप्रथम 1968 में प्रसिद्ध महिला गायिका और संगीतकार ऊषा खन्ना जी ने पहचाना और पहला ब्रेक दिया। इनके संगीत निर्देशन में इन्होंने 'बंदिश' और 'अनजान है कोई' फिल्मों में गाने गए। मगर इन फिल्मों को ज्यादा सफलता मिली न इन्हें कोई विशेष पहचान। मगर इनका सही वक्त अभी आना शेष था। राजश्री की फिल्म 'गीत गाता चल' में संगीतकार रविन्द्र जैन जी के निर्देशन में उनकी आवाज पूरे देश में छा गई। इसके बाद उन्होंने 'नदिया के पार',

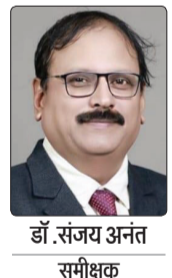


अभिषेक मिश्र
लेखक

फिल्म समीक्षा

नए भारत की कूटनीति को बयां करती फिल्म

धुरंधर: द रिवेज, एक ऐसी फिल्म, जिसे आप दम साधे पूरी देखना चाहेंगे। कोई डिस्टर्बेंस आप को पसंद नहीं आएगा, आप की नजरें रुपहले पदों पर ही टिकी होगी, जिज्ञासा चरम पर होगी इसके बाद क्या? आप बस यही सोचेंगे, इसके सिवाय कुछ नहीं... यदि आप ने धुरंधर का पहला भाग देखा है, तो आप अनुभूत करेंगे कि ये उस से कहीं बेहतर है, फिल्म की एडिटिंग गजब की है, स्क्रिप्ट भी बेहतरीन और एक्टिंग तो ऐसी की, भाई सभी कलाकारों को सैल्यूट करने को जो करता है। ये भारतीय सिनेमा की सफल और बेहतरीन फिल्मों की सूची में अपना नाम अवश्य दर्ज कराएंगी।



डॉ. संजय अनंत
समीक्षक



सन 2014 के बाद का भारत, अब केवल बदला नहीं लेता, घर में घुसकर मारता भी है। मोदी जी, टीवी पर नोटबंदी की घोषणा करते हैं और बर्बाद पाकिस्तान होता है, ये फिल्मी शोशा नहीं, हकीकत थी। कराची में आईएसआई के इशारे पर बड़े पैमाने पर फेक करेंसी यानी नकली नोट बड़े पैमाने पर छपते और ये नेपाल या कश्मीर के रास्ते से भारत लाया जाता। ठीक है फिल्म की कहानी में कुछ नाटकीयता है, किंतु इसके बाद भी ये फिल्म, कराची के इस सदी के प्रथम दशक की कहानी

बयां करती है। रॉ के लोग पहले भी पाकिस्तान में सक्रिय थे, वे सूचना भेजते, किंतु उस पर कड़ी कार्यवाही नहीं होती थी, पर अब अजीत डोभाल देश की सुरक्षा संभाल रहे हैं, जो स्वयं कभी पाकिस्तान में भारत के जासूस रहे हैं, अब जो इनपुट हमारे एजेंट्स वहां से भेजते हैं, उस पर तुरंत कार्यवाही होती है। यूपी के माफिया अतीक अहमद, पाकिस्तान की संस्थाएं, लाऊद सबका गठबंधन सच्चाई है और यही इस फिल्म का आधार है। बीते वर्ष में अनेक मोस्ट वांटेड आतंकी या उनके अन्नदाता जो पाकिस्तान में थे, अज्ञात बंदूकधारियों द्वारा कल्ल कर दिए गए। यही है नया भारत। जमील साहब यानी राकेश बेदी साहब की एक्टिंग तो कमाल की है, आर माधवन, सान्याल साहब के रूप में, संजय दत्त एसपी चौधरी के रूप में, फिल्म का हीरो रणवीर सिंह, सब ने अपने रोल के साथ न्याय किया है, अर्जुन रामपाल (मेजर इकबाल) क्रूरता घृणा चेहरे से झलकी, गजब की एक्टिंग, दो कमियां भी बताते चल्ते, अत्याधिक वीथल्स हिंसक सीन और कुछ अश्लील संवाद, इसलिए सेंसर बोर्ड ने ए सर्टिफिकेट दिया है, निर्देशक इसके बिना भी यदि फिल्म बनाते तो वो उतनी ही प्रभावशाली होती, इसकी जरूरत नहीं थी। यह फिल्म निश्चित ही सुपरहिट होगी और भारतीय सिनेमा की बेहतरीन फिल्मों में अपना स्थान बनाएगी। निर्देशक और पटकथा लेखन, दोनों आदित्य धर ने किया, वे निश्चित ही बधाई के पात्र हैं और पुरस्कार के भी।

जंजीर जिसने बदल दी अमिताभ बच्चन की तकदीर



11 मई 1973 को रिलीज हुई 'जंजीर' एक ऐसी फिल्म थी, जिसने अमिताभ बच्चन के करियर को पूरी तरह से बदलकर, उन्हें बॉलीवुड में एंटी यंग मैन के रूप में स्थापित किया। इस फिल्म ने फिल्म इंडस्ट्री को एक नया सुपरस्टार दिया। गौरतलब है कि सलीम-जावेद द्वारा लिखित और प्रकाश मेहरा द्वारा निर्देशित इस फिल्म को पहले कई बड़े अभिनेताओं ने टुकरा दिया था। जावेद अख्तर ने एक इंटरव्यू में बताया था कि जंजीर धर्मेन्द्र को लेकर लिखी गई थी, लेकिन धर्मेन्द्र ने किन्हीं कारणों से फिल्म करने से मनाकर दिया था।

अमिताभ बच्चन ने 1969 में फिल्म 'सात हिंदुस्तानी' से अपने फिल्मी करियर की शुरुआत की थी। इसके बाद उनकी 11 फिल्में रिलीज हुईं, जिनमें भुवन सोम, परवाना, रेश्मा और शेर, प्यार का घर आदि शामिल हैं, पर कोई भी बड़ी हिट साबित नहीं हुई। 1971 में आई फिल्म आनंद जरूर सफल रही पर सारा क्रेडिट राजेश खन्ना ले गए। जंजीर में इम्पेक्टर विजय खन्ना के किरदार ने अमिताभ बच्चन को एक गुस्सैल, कड़क पुलिस अधिकारी के रूप में पेश किया, जिसे तब के युवा दर्शकों ने खूब पसंद किया और फिल्म की सफलता के बाद अमिताभ ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। इस फिल्म के बाद अमिताभ बच्चन की तकदीर बदल गई और उन्होंने कई हिट फिल्में दीं। फिल्म में अमिताभ बच्चन और प्राण पर फिल्माया गया गाना 'यारी है इमान मेरी' आज भी बहुत पसंद किया जाता है। अमिताभ बच्चन को जंजीर इतनी आसानी से नहीं मिली। वे इस फिल्म के लिए पहली पसंद तो कर्तव्य नहीं थे। इससे पहले उनकी कई फिल्मों में फ्लॉप हो चुकी थीं। धर्मेन्द्र के बाद राजकुमार और देवानंद ने भी निजी कारणों से फिल्म करने से मनाकर दिया था। एक दिन प्रकाश मेहरा 'मुंबई टू गोवा' फिल्म देख रहे थे। अमिताभ की एक्टिंग देख उन्होंने तय किया कि उनकी फिल्म के हीरो वही होंगे। कहते हैं कि प्राण ने भी प्रकाश मेहरा को अमिताभ बच्चन का नाम सुझाया था। जंजीर की कहानी सलीम खान और जावेद अख्तर की



मशहूर जोड़ी ने लिखी थी। फिल्म की कहानी, डायलॉग और सीन लोगों को इतने पसंद आए कि फिल्म सुपरहिट साबित हुई और अमिताभ भी रातों-रात स्टार बन गए। इसके बाद इस जोड़ी ने अमिताभ के साथ कई हिट फिल्में दीं, जिनमें शोले, दीवार, काला पत्थर, शान, त्रिशूल, डॉन आदि शामिल हैं। जंजीर में अमिताभ बच्चन इम्पेक्टर विजय खन्ना के रोल में थे, जबकि जया बच्चन उनकी प्रेमिका माला तथा प्राण ने शेर खान का रोल निभाया था। इनके अतिरिक्त इस फिल्म में अजीत, ओमप्रकाश, इफ्तखार, केस्टो मुखर्जी, बिंदु आदि कलाकार भी शामिल थे। फिल्म में संगीत कल्याण जी आनंद जी का था। यह फिल्म लगभग 90 लाख की बजट में बनी थी और इस फिल्म ने 17 करोड़ से ज्यादा की कमाई की। फिल्म ब्लॉकबस्टर साबित हुई। जंजीर के लिए उस साल अमिताभ बच्चन को सर्वश्रेष्ठ अभिनेता के लिए फिल्म फेयर पुरस्कार के लिए भी नामांकित किया गया था, लेकिन पुरस्कार बाँबी के लिए ऋषि कपूर को मिला था।



दीपक नौगाँ
लेखक, हल्द्वानी